International Seminar [Hybrid Mode] on "Integrating Indian Knowledge System with Modern Education: Explore frameworks for incorporating IKS into contemporary curricula, aligning with NEP 2020" 19-20 Dec'2024
With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

नैतिकता और मूल्य– आधारित शिक्षा

रेणु साहू
सहायक प्राध्यापक
सांदीपनी एकेडमी अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवन के सही और गलत पक्ष को समझने, अपने आचार–व्यवहार में सुधार लाने और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करना है। इस प्रकार की शिक्षा विद्यार्थियों को सिर्फ शैक्षिक ज्ञपन नहीं ब्लकि जीवन के मूल्य और नैतिक सिद्धांत भी सिखाती है। यह शिक्षा समाज में आपसी सम्मान, समझ और सहिष्णुता को बढ़ावा देती है, जिससे समाज में सद्भाव और शांति स्थापित होती है।

नैतिकता से तात्पर्य है उन सिद्धांतों और मानकों से, जो किसी व्यक्ति के आचरण को सही या गलत के रूप में परिभाषित करते हैं। इसमें ईमानदारी, सहानुभूति, न्याय और सम्मान जैसे गुण शामिल हैं। मूल्य–आधारित शिक्षा में बच्चों को इन नैतिक मूल्यों का पालन करना सिखाया जाता है ताकि वे अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझ सकें।

विद्यार्थियों में समाज में आपसी सम्मान और सहयोग और भावना पैदा होती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करती है, जिससे के आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का सम्मान करना सिखाती है। विद्यार्थियों को नैतिक निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त होती है, जिससे वे जीवन के कठिन परिस्थितियों में सही विकल्प चुन सकते हैं।

हालांकि, नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा को लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे समाज में भौतिकवाद और सफलता की नकारात्मक प्रवृतियाँ, शिक्षकों की उसित प्रशिक्षण की कमी और परिवारों का सही दिशा में मार्गदर्शन न करना। इन चुनौतियों के बावजूद, समावेशी शिक्षा प्रणाली, शिक्षक प्रशिण और परिवार की भूमिका को मजबूत करने के उपयों से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

अंततः नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सुधारती है, बल्कि यह समाज में एक सकारात्मक और जिम्मेदार नागरिकता की भावना को भी बढ़ावा देती है।यदि इसे सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह एक बेहतर, अधिक नैतिक और संवेदनशील समाज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

परिचयः

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा का उद्येश्य विद्यार्थियों को जीवन में सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाना है। यह शिक्षा उन्हें न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि समाज में जिम्मेदार और ईमानदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक गुणों से भी अवगत कराती है। एक मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली बच्चों को सिर्फ उनके करियर में सफलता नहीं दिलाती, बल्कि उघ्न्हें समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का अहसास भी कराती है।

नैतिकता और मूल्य आधारित शिक्षा समाज के सर्वांगीण विकाश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

यह शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं रहती बल्कि यह व्यक्ति के आचार–विचार, आस्थाएँ और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी सुदृढ़ करती है। नैतिकता किसी भी समाज की आधारशीलता होती है। क्योंकि यह व्यक्ति के आंतरिक गुणों को जाग्त करती है और उसे ही सही गलत का भान कराती है। मूल्य आधरित शिक्षा जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकाण और आदर्शों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है, जिसके माध्यम से समाज में शांति सहयोग और समानता का वातावरण तैयार किया जा सकता है।

टाज के वैष्वीकरण और प्रौद्योगिकी के इस युग में जब भैतिकवाद और उपभोक्तावाद का प्रभाव बढ़ रहा है तो ऐसे में मूल्य और नैतिक शिक्षा की अहमियत और भी बढ़ जाती है। विद्यार्थियों को न केवल अकादमिक ज्ञान देना , बल्कि उन्हें जीवन के सही मूल्यों और आदर्शों से भी परिचित कराना अनिवार्य है। एक सशक्त और समृद्ध समाज की रचना के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में नैतिकता, ईमानदारी , सहानुभुति , दया सम्मान और परोपकार जैसे मूल्य शाामिल किए जाएं।

इस संर्दभ में मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यो के प्रति जागरूक करना नही बल्कि उन्हे आत्म–निर्भर सहनशील और , जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करना भी है। इसके माध्यम से विघार्थियो में मानसिक ,बौद्धिक और आत्मिक संतुलल का विकास होता है, जो उन्हे जीवन की कठिनाइयो का सामना करने के लिए सक्षम बनाता है।

नैतिकता, और मुल्य आधारित शिक्षा का प्रभाव केवल विद्यालयो तक ही सीमित नही रहता है बल्कि यह व्यापक के रूप से परिवार ,सामाज और राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब सामाज के प्रत्येक सदस्य में उच्च मानवीय मुल्य होंगे , तभी सामाज समृद्ध और प्रगति की ओर अग्रसर होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर नैतिकता और मूल्यो को प्राथमिकता दे, ताकि आने वाली पीढ़ी सशक्त , समझदार और जिम्मेआर नागरिक के रूप में अपनी भुमिका निभा सके।

नैतिकता का महत्व :

नैतिकता से तात्पर्य उन सिद्धांतो और मानको से है जो सामाज में सही आचरण और व्यवहार को निर्धारित करते है। इसमे ईमानदारी ,समर्पण , न्याय ,सम्मान और सहानुभुति जैसे गुण शामिल है। नैतिकता न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है,बल्कि सामाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व :

मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक कौशल विकसित करना नहि है बल्कि यह विद्यार्थियों को सशक्त बनाती है ताकि वे अपने व्यक्तिगत जीवन में उच्च मानको का पालन करे और सामाज में नैतिक जिम्मेदारी निभाएं। मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को आत्म – संवर्धन , सहिष्णुता , टीमवर्क और परिवापिक और सामाजिक मूल्यो के महत्व को समझाती है।

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा के लाभ;

- **समाज मे सद्भावना :** जब विद्यार्थियो को नैतिक शिक्षा दी जाती है, तो वे समाज में आपसी सम्मान और समझ का आदान–प्रदान करते है, जिससे समाज में सद्भावना में और शांति बढ़ती है।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

- **व्यक्तित्व विकास :** यह शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है, जिससे वे आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनते है। वे अपनी गलतियों से सीखते हैं और सही निर्णय लेने की क्षमता विकसीत करते है।
- **धार्मिक और सांस्कृतिक सद्भाव :** मूल्य–आधारित शिक्षा विद्यार्थियो को विभिन्न धार्मिक , सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती है।
- **नैतिक निर्णय क्षमता :** जब विद्यार्थी नैतिक मूल्यों और सिद्धांतो के बारे में सोचते हैं, तो वे अपने जीवन में बेहतर निर्णय लेने की क्षमता विकसीत करते है। यह शिक्षा उन्हें जीवन के कठिनतम क्षणो में सही और गलत के बीच अंतर करने की समझ देती है।

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा में चुनौतियाँः

समाज में बदलाव : वर्तमान समाज में व्यावसायिक सफलता और भौतिकवाद की ओर झुकाव ने नैतिक शिक्षा की अहमियत को कम कर दिया है। विद्यार्थियो में अक्सर नैतिकता की बजाय केवल अच्छे अंक प्राप्त करने का जवाब रहता है।

- **शिक्षकों की भूमिका :** नैतिक शिक्षा देने के लिए शिक्षको की भूमिका अत्यंत महत्वर्पूण होती है, लेकिन कई बार शिक्षक इस दिशा में अधिक ध्यान नहीं दे पाते। इसके कारण मूल्य–आधरित शिक्षा का प्रभाव कमजोर हो सकता है।
- **परिवार और समाज का प्रभाव :** बच्चो पर परिवार और समाज का प्रभाव भी महत्वपूर्ण होता है। यदि परिवार में नैतिकता और मूल्य नहीं सिखाए जाते, तो स्कूल में नैतिक शिक्षा का असर सीमित हो सकता है।

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा के उपायः

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा विद्यार्थियों में सही और गलत का भेद समझने, अच्छे आचर–व्यवहार को अपनाने और समाज के प्रति जिम्मेदारी का एहसास कराने के लिए महत्वपूर्ण है। इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली न केवल शिक्षा में सुधार करती है, बल्कि यह विद्यार्थिया का बेहतर नागरिग बनने में भी मदद करती है। नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा के कुछ प्रमुख उपाय निम्नलिखित है :

- **समावेशी शिक्षा प्रणालीः** स्कूलो और विश्वविद्यालयों में नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए। विद्यार्थियों को ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान की जानी चाहिए जिनमें वे नैतिक निर्णय लेने और उनके परिणामों का समझने में सक्षम हो सकें।
- **शिक्षको का प्रशिक्षणः** शिक्षको को नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे बच्चो को सही मार्गदर्शन और प्रेरणा दें सकें।
- **परिवार की भूमिकाः** परिवार को बच्चो को सही मूल्य और नैतिक शिक्षा देने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। परिवार का वातावरण बच्चे के वक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है।
- **कक्षा में नैतिकता और मूल्यों को समाहित करनाः**

नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का समावेशरू स्कूलों और कॉलेज के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में या विभिन्न विषयों में समाहित किया जा सकता हैं। इसमें

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

अच्छे व्यवहार, ईमानदारी, न्याय, समानता, दया, साहस, और समाज के प्रति जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को सिखाया जा सकता हैं।

- **कहानी और उपकथाएँः** प्राचीन भारतीय कथाएँ जैसे रामायण, महाभारत, और पंचतंत्र की कहानियाँ, जो नैतिक शिक्षा देने का एक प्रणाली साधन हैं, का उपयोग किया जा सकता हैं।
- **व्यक्तित्व उदाहरण द्वारा शिक्षाः**

शिक्षक और अभिभावक विद्यार्थियो के लिए आदर्श होता हैं। यदि शिक्षक खुद नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं, तो छात्रों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तिगत उदाहरण देना : शिक्षक और अभिभावक अपने आचरण, निर्णय और व्यवहार में नैतिकता का पालन करके बच्चों को यह सिखा सकते है कि कैसे अपनी नैतिकता और मूल्यों को साथ जीवन जीना चाहिए।

- **समाज सेवा और साक्षात्कार**
  विद्यार्थियो को समाज में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण, गरीबों की मदद करने या अन्य सामाजिक कार्यो के माध्यम से हो सकता है।
- **साक्षात्कार और चर्चा :** नौतिकता और मूल्यो पर बातचीत करने के लिए विशेषज्ञों को बुलाया जा सकता है, जो विद्यार्थियों को इन विषयो पर गहरे विचार करने का अवसर प्रदान करें।
- **समूह गतिविधियाँ और परियोजनाएँ**
  विद्यार्थियो को समूह में काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जहां वे एक दूसरे से सीखते है और सामाजिक मूल्यों को समझते हैं। समूह परियोजनाओं में टीमवर्क, सहयोग, और दूसरों के प्रति सहानुभूति जैसे गुणों का विकास हो सकता है।

- **समूह चर्चा और निर्णय लेना :** विद्यार्थियो को नौतिक दुविधाओं पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करें, जिससे वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकें और सही निर्णय लेने की प्रक्रिया समझ सकें।
- **नौतिक और मूल्य–आधारित कार्यशालाएँ और सेमिनार**
- शिक्षको और विद्याार्थियो के लिए नैतिकता और मूल्यो पर कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती है। इनमे विशेषज्ञों से बातचित, केस स्टडी, और विचार – विमर्श के माध्यम से नैतिक निर्णय लेने के तरीके सिखाए जा सकते है।
- **धार्मिक शिक्षाः** धार्मिक शिक्षा में नैतिकता और मूल्यों को शामिल किया जा सकता है ,जो विभिन्न धर्मों के शिक्षाओं को समझने और उनका पालन करने का अवसर प्रदान करता है।
- **नैतिक निर्णय लेनेकी क्षमता का विकास**
- विद्यार्थियों को नैतिक निर्णय लेने में मदद करने के लिए उन्हें विचारशील और संवेदनशील बनाया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर,जब कोई कठिन स्थिति आती है, तो छात्रों को यह सिखाया जा सकता है कि वे अपने फैसले पर विचार करें, परिणामा को समझें और फिर सही रास्ते का चयन करें।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

- **मूल्य आधारित खेल और गतिविधियाँ:** खेलों और अन्य शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्म–नियंत्रण,ईमानदारी और खेल भावना को बढ़ावा दिया जा सकता हैं।
- **समाज और पारिवारिक मूल्य**
  परिवार में नैतिक मूल्यों का पालन करना और उन्हें समझाना बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि परिवार में अच्छे मूल्य होते है, तो बच्चों में भी ये गुण विकसित होते हैं।
- **आधुनिक तकनीक का उपयोग:** नैतिक शिक्षा को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स के माध्यम से भी बढ़ावा दिया जा सकता है, ताकि बच्चों को मूल्यों के बारे में सिखाया जा सके।
- **पुनः मूल्यांकन और सुधार**
- समय–समय पर शिक्षा के तरीके और पाठ्यक्रम का मूल्यांकन किया जाता चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विद्यार्थियों को सही नैतिक शिक्षा मिल रही हैं।
- **नैतिक मूल्य पर आधारित परीक्षा:** विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय और मूल्यों की परीक्षा ली जा सकती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि वे इन अवधारणाओं को अच्छी तरह से समझते हैं और उनका पालन करते हैं।

निष्कर्ष:

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास और व्यक्तिगत व्यक्तित्व के निर्माण के लिए लिए अत्यंत आवश्यक है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाने में मदद करती है। इसके माध्यम से वे अपने समाज और देश के लिए सकारात्मक योगदान देने में सक्षम बनते हैं। हांलांकि, इसके सफल कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन यदि हम समग्र दृष्टिकोण से इसे अपनाते हैं तो हम एक बेहतर और नैतिक समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

नैतिकता और मूल्य–आधारित शिक्षा किसी भी समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह केवल एक व्यक्ति के ज्ञान और कौशल को बढ़ावा नहीं देती, बल्कि उसकी सोच, दृष्टिकोण और सामाजिक जिम्मेदारियों को भी आकार देती हैं। जब शिक्षा में नैतिक और मानवीय मूल्य समाहित होते हैं, तो यह व्यक्ति को न केवल अच्छा इंसान बनाती है, बल्कि समाज के प्रति उसके दायित्वों को भी प्रगाढ़ करती है।

आज के दौर में, जहां भौतिकवाद, उपभोक्तावाद और आत्मकेंद्रित सोच का प्रभाव बढ़ रहा हैं, वहां मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। यह शिक्षा व्यक्तियों को न केवल जीवन के सही और गलत के बीच अंतर सिखाती है,बल्कि उन्हें सामूहिक कल्याण, सहिष्णुता,और सहयोग की भावना से भी परिपूर्ण करती है। इससे विद्यार्थियों में आत्म– निर्भरता, नयापन, सहानुभूति, और सामाजिक चेतना का विकास होता है, जो उनके व्यक्तिगत जीवन और समाज के लिए फायदेमंद साबित होते हैं।

नैतिक शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है कि यह विद्यार्थियों को सिर्फ परीक्षा के परिणामों तक सीमित नहीं रखती,बल्कि उन्हें एक सश्क्त, समझदार और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करती हैं। ऐसी शिक्षा के माध्यम से समाज में न केवल आपसी संबंधों में सुधार होता है, बल्कि समग्र रूप से शांति, समृद्धि और न्याय की भावना का भी प्रसार होता हैं।

With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.249 ISSUE-IV(II), VOLUME-XI
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IV02V12P0022

अंततः,हम कह सकते हैं कि नैतिकता मूल्य–आधारित शिक्षा का समावेश न केवल शैक्षिक प्रणाली को मजबूत बनाता है, बल्कि समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति में भी योगदान करता है। यह हर क्षेत्र में सच्चे, ईमानदार और समझदार नागरिकों की आवश्यकत को पूरा करता है, जो सामाज को एक बेहतर दिशा में आगे बढा सकता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः–

- शर्मा, आर. एन.(2015). शिक्षा और मूल्य. दिल्लीः बूक एंड पब्लिशिंग.
- बगची, ए.(2007). नैतिक शिक्षा और समाज. इलाहाबादः हिंदी साहित्य सम्मेलन.
- कुमार, डॉ. मणिकांत (2010). मूल्य आधारित शिक्षाः आवश्यकता और चुनैती. मेरठरू अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- रावत, डॉ. सूर्यप्रकाश(2013).नैतिकता, मूल्य और सामाज में शिक्षा. जयपुरः राजस्थन पब्लिशर्स.
- जोशी, डॉ. पंकज (2018). मूल्य शिक्षा और उसका प्रभाव. लखनउः शिक्षा प्रकाशन. सिंह, डॉ. रामनाथ (2012). मूल्य आधारित शिक्षा और व्यक्तित्व विकास. वाराणसीः शारदा पब्लिशिंग.
- डेक्स्टर ए. (2014).इंटरनेशनल एजुकेशन एंड सोशल एथिक्स. न्यूयॉर्करू राउटलेज.
- नील, थॉमस (2009). मूल्य आधारित शिक्षा के सिद्वांत और अभ्यास. मुंबईरू पीएचपी प्रकाशन.
- चतुर्वेदी, डॉ. रामवृक्ष (2016). नैतिक शिक्षारू दृष्टिकोण और सिद्वांत. भोपालरू मध्य प्रदेश शिक्ष परियाद्.
- एरिसन, पॉल (2011). सार्वजनिक जीवन में नैतिक और शिक्षा. लंदनरू इंग्लैंड अकादमिक प्रेस.